स्वच्छन्द "क्रान्तिकारियों" का विरोध करो !

भारत के क्रान्तिकारी आंदोलन के सामने कई समस्यायें हैं। इन विभिन्न प्रकार की समस्याओं को अगर ठीक तरह से हल कर लिया जाता है तो आंदोलन के विकास के रास्ते और ज्यादा खुल सकते हैं। इन्हीं समस्याओं में से एक समस्या है 'गैर पार्टी प्रतिबद्धता' का विचार। मतलब ऐसा विचार जो क्रांतिकारी आंदोलन के किसी भी पूर्व पार्टी संगठनों से अलग रहकर, 'तटस्थ' रहकर 'क्रांति' करने का विचार है।

पार्टी संगठनों से स्वतंत्र अच्छी खासी संख्या में ऐसे व्यक्ति या ढीले-ढाले समूह मौजूद हैं। इस विचार को मानने वाले लोग अच्छी खासी तादाद में क्रांतिकारी खेमे के घटक संगठनों के भीतर भी मौजूद हैं। ये व्यक्ति व समूह इंकलाब के नाम पर कई तरह की गतिविधियों को अंजाम देते रहते हैं। ये मार्क्सवाद, लेनिनवाद के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित करते हैं, प्रगतिशील सांस्कृतिक गतिविधियां करते हैं या फिर अकेले ही या किसी बैनर के तहत शोषित वर्गों, तबकों की स्वतःस्फूर्त लड़ाइयों में कूदकर उन्हें नेतृत्व देने का प्रयास करते हैं। भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन में मौजूद बिखराव के सापेक्ष यह विचार और इस विचार के वाहक खासी ताकत रखते हैं। इस विचार के खिलाफ व्यापक संघर्ष आंदोलन के लिए चुनौती है। इन विचारों की दीमक से आंदोलन को बचाना बेहद जरूरी है।

यह विचार किस रूप में आज अभिव्यक्त हो रहा है और इसको किस नज़र से देखा जाए? इस विचार की प्रमुख अभिव्यक्तियां हैं: (i) व्यक्ति व ढीले-ढाले समूह, (ii) साहित्य व संस्कृतिकर्म।

व्यक्ति और ढीले-ढाले समूह: पार्टी संगठनों के भीतर विजातीय प्रवृत्तियों के खिलाफ चलने वाले संघर्ष पार्टी जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। अगर यह संघर्ष स्वस्थ प्रक्रिया में चले तो पार्टी संगठन और आंदोलन के विकास में मददगार होते हैं। कई दफा इन संघर्षों की परिणति गैरजरूरी फूटों को भी जन्म देती है। राजनीतिक विचारधारात्मक संघर्ष के बीच से भाग खड़े होने की प्रवृत्ति इन फूटों के लिए मूलतः जिम्मेदार होती है। यह प्रवृत्ति, राजनीतिक बहस को ढांचे के भीतर ठीक तरह से न चलने देने, अल्पमत द्वारा बहुमत को न मानने, जनवादी केंद्रीयता की अवहेलना आदि के रूप में सामने आती है। इस कुप्रवृत्ति से लैस व्यक्ति अपनी तात्कालिक सोच के सामने पार्टी संगठन की एकता को तवज्जो नहीं देते। ऐसे व्यक्ति अपनी व्यक्तिवादी, स्वेच्छाचारी सोच के साथ या तो पार्टी संगठनों से अलग स्वतंत्र जनसंगठन बनाने के प्रयास करते हैं या जन संघर्षों में भागीदारी कर हवा के झोंकों में उड़ने वाले पत्ते बन जाते हैं।

निम्न पूंजीवादी व्यक्तिवाद से ग्रस्त इस आज़ाद ख़्याल विचार के 'क्रांतिकारी' अपने इर्द-गिर्द चंद लोगों का घेरा बनाकर बगैर किसी ठोस विचारधारात्मक, राजनीतिक, सांगठनिक दिशा के "सक्रिय सामाजिक हस्तक्षेप" करते हुए मिल जाते हैं। दरअसल किसी भी ठोस दिशा का न होना ही इनकी दिशा है। अपने निम्न बुर्जुआ व्यक्तिवाद के चलते ये लोग या तो कोई ढांचा बनाते ही नहीं हैं या बनाते भी हैं तो एक ऐसा ढांचा जिसके केंद्र में यह खुद हों। इस समूह की राजनीति, विचारधारा, सांगठनिक ढांचा, कार्यक्रम ये व्यक्ति खुद बन जाते हैं। यह एक ऐसा समूह होता है जहां पर ये व्यक्ति के रूप में सर्वेसर्वा बन जाते हैं। अपनी जिन निम्न पूंजीवादी प्रवृत्तियों के चलते यह लोग पार्टी संगठनों से अलग होते हैं, उसी के अनुरूप अपना ढांचा बनाते हैं। न अल्पमत-बहुमत, न कोई जवाबदेही .... जब चाहा काम किया, जैसे चाहा किया। अपनी निम्न पूंजीवादी महत्वाकांक्षाओं से ये लोग पार्टी संगठनों में बिखराव तो पैदा करते ही हैं, जनता के बीच भी भ्रम फैलाने का काम करते हैं। पार्टी संगठनों से अलग रहकर विभिन्न वर्गों-तबकों की तात्कालिक लड़ाई तक समाजवाद के अर्थ को सीमित कर देते हैं। इन लोगों के ही बारे में लेनिन लिखते हैं-

"जो मुक्ति के लिए 'गैर पार्टी' संघर्ष करते हैं, वे या तो मुक्ति के बुर्जुआ स्वरूप को समझते नहीं हैं, या इस बुर्जुआ

प्रणाली का पवित्रीकरण करते हैं; या फिर वे उसके विरुद्ध संघर्ष को, उसके 'परिष्करण' को ग्रीक कैलेंडों तक स्थगित कर देते हैं। इसके विपरीत जो जाने-अनजाने बुर्जुआ प्रणाली के पक्ष में होते हैं वे यह अनुभव किए बिना नहीं रह सकते कि उन्हें गैर पार्टी प्रतिबद्धता का विचार अपनी ओर आकर्षित कर रहा है"।

(लेनिन, 'समाजवादी पार्टी और गैर-पार्टी क्रान्तिवाद', पृष्ठ-241, खण्ड-3, संकलित रचनायें, 10 खण्डों में)

साहित्य व संस्कृतिकर्मः भारतीय समाज में पार्टी संगठनों से अलग रहकर साहित्यिक व सांस्कृतिक कर्म करने वाले व्यक्ति भी खासी तादाद में दिखाई देते हैं। कई साहित्यिक पत्र-पत्रिकायें, नाट्य मंच ऐसे लोगों द्वारा बनाये गये हैं जो किसी भी पार्टी संगठन के अनुशासन में नहीं रहना चाहते। इन्हें लगता है कि ये स्वतंत्र रूप से साहित्यिक या संस्कृतिकर्म करके ही इंकलाब की राह पर चल रहे हैं। अपनी साहित्यिक व सांस्कृतिक क्षमताओं की वजह से खुद को सबसे खास समझने की मानसिकता इस गैर पार्टी कार्य के मूल में होती है। अपने व्यक्तित्व और निजी ज्ञान, क्षमताओं पर समूह से ज़्यादा भरोसा रखने की यह क्षुद्र मानसिकता अक्सर ही इन लोगों के दिमाग़ में यह मतिभ्रम भी पैदा करती है कि व्यक्ति खुद को भारतीय इंकलाब की धुरी समझने लगता है। जबकि असलियत यह है कि ये व्यक्ति अपने अधिकतम् लक्ष्य के रूप में बुर्जुआ प्रगतिशीलता के दायरे से बाहर नहीं निकल पाते बल्कि नहीं निकल सकते। इसकी वजह साफ है। सर्वहारा राजनीति के किसी भी रूप को अगर इंकलाबी पार्टी संगठन के मातहत नहीं किया जा रहा है तो वह 'ज्ञान-विज्ञान जत्था' के सरकारी नाटक से अलग कैसे हो सकता है। बुर्जुआ राजसत्ता को उखाड़कर सर्वहारा राज्य कायम करने के लिए महत्वपूर्ण उपादान है कम्युनिस्ट पार्टी। पार्टी ही सर्वहारा की लड़ाई की रणनीति तैयार करेगी और बेहतर रणकौशल से बुर्जुआ के मजबूत तंत्र को उखाड़ फेंकेगी। इसलिए सर्वहारा पार्टी निर्माण के मकसद से अलग रहकर आप तर्कपरकता, तर्कशीलता, प्रगतिशीलता का प्रचार तो कर सकते हैं, समाजवाद की लड़ाई में कोई योगदान नहीं दे सकते। इस प्रचार से पूंजीपति को भला क्या दिक्कत हो सकती है। इस काम के लिये तो वह सिक्के फेंकने में भी खुशी महसूस करेगा। इस तरह के कामों के बारे में लेनिन की टिप्पणी पढ़िये:

> "बात महज़ इतनी नहीं है कि समाजवादी सर्वहारा वर्ग के लिए साहित्य व्यक्तियों अथवा दलों के लाभ का साधन नहीं हो सकता: आम तौर पर वह सर्वहारा वर्ग के साझे हेतु से स्वाधीन व्यक्तिगत हेतु नहीं हो सकता। गैर पार्टी लेखक मुर्दाबाद! साहित्यिक महामानव मुर्दाबाद! साहित्य को सर्वहारा वर्ग के साझे हेतु का एक अंग बन जाना चाहिए, समूचे मजदूर वर्ग के समूचे वर्ग चेतन हरावल द्वारा संचालित अभिन्न, महान सामाजिक जनवादी मशीन का "दांता और पेंच" बन जाना चाहिए। साहित्य को सामाजिक जनवादी पार्टी के संगठित, योजनाबद्ध और समेकित काम का उपादान बन जाना चाहिए।
>
> (लेनिन, 'पार्टी संगठन और पार्टी साहित्य', पृष्ठ-223, खण्ड-3, सं0 रचनाएं, 10 खण्डों में)

इन दो महत्वपूर्ण श्रेणियों के अलावा इन "क्रान्तिकारियों" की जमात में कई अन्य धारायें भी है; मसलन प्रगतिशील साहित्य के विक्रेता, लेखक, पुस्तकालयाध्यक्ष, मजदूरों के सलाहकार ... आदि। इन सभी के लिए यही कहा जा सकता है कि अगर आप मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर भरोसा रखते हैं और इस विचारधारा की रोशनी में इंकलाब करना चाहते हैं, तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करना होगा। एकीकृत अखिल भारतीय पार्टी के निर्माण की ईंटें रखनी होंगी। ऐसा तभी किया जा सकता है जब क्रान्तिकारी आंदोलन का हिस्सा बना जाय (किसी क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी-संगठन में अनुशासित कार्यकर्ता बतौर शामिल होकर ही)। खेमे में मौजूद राजनीतिक, मतभेदों को हल करने में भूमिका अदा की जाए।

अगर इन 'आज़ाद', 'तटस्थ', 'स्वच्छंद', 'क्रान्तिकारियों' से यह पूछा जाए कि आप मुल्क में सर्वहारा नेतृत्व में क्रांति के पक्षधर हैं तो आप किसी पार्टी संगठन में शामिल क्यों नहीं हो जाते? तो कई तरह के जवाब और तर्क सुनने को मिलते हैं। इन व्यक्तियों के द्वारा दिया जाने वाला सबसे बेहूदा तर्क यह है कि "आंदोलन बिखराव का शिकार है इसलिए हम किसी धड़े में शामिल न होकर, 'तटस्थ' रहकर एकता व एकजुटता के लिए प्रयास करना चाहते हैं"। मतलब न केवल यह लोग सरपंच बनना चाहते हैं बल्कि इनको सरपंच होने को गलतफहमी भी है। ऐसे व्यक्तियों को यह ठीक तरह से समझ लेना चाहिए कि आंदोलन के बीच मौजूद अंतर्विरोध, जमीन दबा लेने या एक दूसरे के घरों के बाहर कूड़ा फेंकने के झगड़े नहीं हैं। खेमे में मौजूद प्रमुख अंतर्विरोध "भारतीय

क्रान्ति-की रणनीति और रणकौशल" की समझ के बारे में हैं। इन अंतर्विरोधों को तभी हल किया जा सकता है जब सभी पार्टी संगठन इस सवाल पर बहस-मुबाहिसा करें। ज्ञान और व्यवहार के समन्वय और अपनी कार्यवाहियों के सार-संकलन से ही इस दिशा में एक राय बनाई जा सकती है। ऐसे में व्यक्तियों की भूमिका गौण है और उन व्यक्तियों की तो कोई भूमिका हो ही नहीं सकती जो इस युद्ध में सर्वहारा की सेना का अंग बनने के बजाय इससे बाहर रहकर कमाण्डर बनने का सपना देखते हैं। खेमें के घटक संगठन देर सवेर इस बिखराव को दूर कर एकजुट होंगे लेकिन इन एकता प्रयासों में किसी चौधरी की कोई भूमिका नहीं हैं। इन 'एकता-पसंद' चिन्तकों से हम यही कहेंगे कि ऐसी किसी भी एकता की कार्यवाही में आप की भूमिका तभी हो सकती है जब आप सर्वहारा सेना के अनुशासित सिपाही बनें। आंदोलन के इन शुभचिंतकों से हमारा यह भी कहना है कि अगर आंदोलन में मौजूद सभी व्यक्ति आपकी तरह सोचने लगे तो हम चन्द संगठनों में बंटे होने के बजाय असंख्य व्यक्तियों में बिखरे दिखाई देंगे।

कुछ व्यक्ति फरमाते हैं कि "कोई भी संगठन इस तरह का नहीं हैं कि हम संतुष्ट हो सकें, इसलिए सही संगठन की खोज जारी है"। इन व्यक्तियों से बातचीत करके यही महसूस होता है जैसे यह किसी संगठन के बारे में नहीं बल्कि अपनी पुत्रवधू की तलाश कर रहे हैं। इंकलाब का सफ़र अंतर्विरोधों, बाधाओं और उतार-चढ़ावों से भरा हुआ है। आज समाजवाद के भवन की आधारशिला बनाने वाले शिल्पियों की ज़रूरत है न कि इस काम से अलग रहकर टिप्पणी करने वाले छिद्रान्वेषियों की। और भला आप अपने ख्वाबों के संगठन का निर्माण करने में क्यों नहीं जुटेंगे। जब इन 'बुरे संगठनों' के 'बुरे लोग' मिलकर एक ऐसे संगठन का निर्माण कर देंगे जैसा कि आपको चाहिये, तब आप खुश होकर ताली बजाएंगे। लेकिन अफसोस ऐसे में कम्युनिस्ट पार्टी आपकी ताली का स्वागत नहीं करेगी बल्कि तब भी आपको यही अहसास कराएगी कि आप इस सफर के हमसफर नहीं हैं।

पार्टी संगठनों से अलग रहकर काम करने वाले इन व्यक्तियों की पार्टी संगठनों में रहकर काम न करने की मूल वजह यही होती है कि ये लोग अपनी व्यक्तिगत रूचियों और सोच को क्रान्ति की व्यापक कार्यवाहियों के मातहत नहीं कर पाते। अपनी निजी स्वतंत्रता, निजी ज्ञान, निजी व्यक्तित्व, निजी महत्वाकांक्षाओं को ये लोग सबसे ऊपर रखते हैं। किसी भी सामाजिक उद्देश्य के लिए अपने स्व को समूह के मातहत करने में इन्हें भारी दिक्कत होती है। सर्वहारा के पार्टी संगठन में जहां व्यक्ति समूह के तथा अल्पमत बहुमत के मातहत होता है, जहां व्यक्ति की क्षमतायें समूह के हिस्से के रूप में काम करती हैं, जहां 'मैं' 'हम' में समाहित हो जाता है, वहां इन व्यक्तिवादी सोच के व्यक्तियों को खासी दिक्कत होती है। ऐसे में ये लोग अपने व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास न हो पाने या पार्टी संगठनों में तानाशाही, यांत्रिकता... आदि का आरोप लगाते हैं। इस तरह के आत्मकेंद्रित व्यक्तियों से यही उम्मीद की जा सकती है कि वह सामूहिक हितों के काम भी खुद को केंद्र में रखकर करना चाहेंगे। वही करना चाहेंगे जो उन्हें पसंद है। सर्वहारा संगठन में इस निम्न बुर्जुआ व्यक्तिवाद के लिए कोई जगह नहीं होती। सर्वहारा पार्टियों में इस तरह के किसी तीस मार खाँ के लिए विशेष छूट नहीं दी जा सकती। यहां हर सदस्य बराबर है, हर किसी को फैसले लेते समय पूर्ण आजादी है और फैसला लेने के बाद समूह के हर सदस्य का कर्तव्य बनता है कि उसे लागू किया जाए। यहां व्यक्तिगत क्षमताओं व हैसियत के मुताबिक किसी को भी विशेषाधिकार नहीं दिये जा सकते। विशेषाधिकार का सपना पालने वाले व्यक्तियों के लिए यही यांत्रिकता और तानाशाही है। इस तरह की सोच के लिए क्रान्तिकारी संगठनों में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

इन सभी तर्कों को समेटकर हम इनका जवाब दें तो यही कहेंगे कि उपरोक्त श्रेणी के सभी व्यक्ति और समूह निम्न पूंजीवादी प्रवृत्तियों से लैस बुद्धिजीवियों की श्रेणी में आते हैं। इनके सभी तर्कों का नतीजा अंततः यही निकलता है कि ये लोग सर्वहारा क्रान्ति के सामने मौजूद चुनौतियों से भाग खड़े होते हैं।

पार्टी संगठनों से किसी भी रूप में अलग रहकर किसी भी तरह की स्वतंत्र कार्यवाही को हम जो भी नाम दें, इसे इंकलाबी कार्यवाही नहीं कहा जा सकता। हिन्दुस्तानी इंकलाबियों के बीच मौजूद इस तरह के किसी भी

विचार को आर-पार का संघर्ष कर पराजित किया जाना चाहिए। लेनिन ने बताया है कि सर्वहारा राजनीति के सभी कार्यों को सर्वहारा संगठन के उच्चतम् रूप—पार्टी—के मातहत ही अंजाम दिया जा सकता है। सर्वहारा वर्ग की पार्टी ही वह उपकरण है जो विभिन्न वर्गों, तबकों की लड़ाई को नेतृत्व देकर सर्वहारा के तात्कालिक व दूरगामी उद्देश्यों के साथ खड़ा कर सकती है। आज हमारा यही कार्यभार बनता है कि जनकार्रवाइयों के सभी रूपों को सर्वहारा की पार्टी के मातहत करें। इससे अलग की जाने वाली कार्रवाइयां महज बुर्जुआ सुधारवाद के लिए की जाने वाली कार्रवाइयां ही मानी जा सकती हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के नाम पर की जाने वाली इस तरह की किसी भी कार्यवाही के लिए हमारा कड़ा और आलोचनात्मक रुख होना चाहिए।

अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण सर्वहारा संघर्षों की निर्णायक विजय हासिल करने के लिए ज़रूरी है। सभी पार्टी-संगठनों को इसी लक्ष्य के अनुरूप अपनी कार्यवाहियों का संचालन करना चाहिए। मार्क्सवाद लेनिनवाद की बारहखड़ी जानने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत अहम को ताक पर रखकर इस मकसद के साथ एकजुट हो जाना चाहिए। आज क्रान्तिकारी खेमा एकजुट होने में कामयाब नहीं हो रहा है। इस दिशा में किए जाने वाले प्रयासों में भी कोताही बरती जा रही है। लेकिन एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी का सवाल दीर्घकाल तक उपेक्षित नहीं रह सकता। इंकलाब के सफर में मजबूत कदमों के साथ बढ़ रहे सभी पार्टी संगठन देर सबेर इस सवाल को हल कर लेंगे। आंदोलन के घटक संगठनों की एकता के इस प्रश्न को आंदोलन ही हल करेगा। आंदोलन से अलग रहकर कोई तीर नहीं मारा जा सकता। हां, आंदोलन की बुरी हालत देखकर कई लोगों को 'तीरंदाज' होने का मुगालता ज़रूर हो सकता है।

आज हमारे आंदोलन में खुद को 'बेमिसाल प्रतिभा' मानने वाले महापुरुषों की अच्छी खासी तादाद है। आंदोलन से बाहर 'महात्माओं' का अच्छा खासा जमघट है। क्रान्तिकारी खेमे के राजनैतिक, सांगठनिक बिखराव इस सोच को ज़मीन मुहैया कराते हैं। क्रान्तिकारी आंदोलन कई-कई पार्टी संगठनों में बंटा हुआ है। पार्टी संगठनों में जिन मुद्दों को लेकर एकता है, वहां भी आपसी सहयोग का अभाव है। विचारधारा के सवालों पर मूलतः एक होने के बावजूद विचारधारा पर हो रहे बाहरी हमलों के खिलाफ भी हम साझा कार्यक्रम नहीं बना पाते। इस बिखराव से स्वयंभू क्रान्तिकारियों को अपने को केंद्र के रूप में स्थापित करने में बल मिलता है। हमें प्रयास करने होंगे कि हम इस बिखराव को दूर करें। हमें आज न्यूनतम एकता के बिंदुओं से शुरुआत करके अपने अंतर्विरोधों को हल करने की ओर बढ़ना होगा। आंदोलन की एकता ही स्वच्छन्द 'क्रान्तिकारियों' की सोच को परास्त करने में कामयाब होगी।

अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण प्राथमिक कार्यभार है, ऐसा आंदोलन के सभी पार्टी-संगठनों का मानना है। लेकिन व्यवहार में लेनिनवादी पार्टी के निर्माण की दिशा में बढ़ना तो दूर कुछ पार्टी संगठनों में सांगठनिक ढांचे के न्यूनतम लेनिनवादी उसूलों को भी लागू नहीं किया जा रहा है। सांगठनिक उसूलों की जगह विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्तियों ने ले रखी है। ऐसे में समूह की जगह व्यक्ति केंद्रित राजनीति के विचार को बल मिलता है। नतीजतन् पार्टी संगठनों के भीतर ही ऐसे नए व्यक्ति लगातार पैदा होते रहते हैं और पनाह भी पाते हैं जो खुद को इंकलाब का केंद्र समझने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति ढीले-ढाले ढांचे से प्रेरणा और ऊर्जा ग्रहण कर कालान्तर में अकेले ही या अपने जैसे व्यक्तियों को लेकर राजनीति करने का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं। इस तरह के कई संगठन स्वच्छंद सोच वाले व्यक्तियों के पनाहगाह ही नहीं बने हुए हैं बल्कि इन निम्न बुर्जुआ सोच वाले व्यक्तियों के खिलाफ संघर्ष को भी कमजोर करते हैं। ये संगठन अन्य पार्टियों से भाग खड़े हुए स्वच्छंद व्यक्तियों को तत्काल शरण देते हैं। इन पार्टी संगठनों को ही विकल्प के रूप में देखकर स्वच्छंद निम्न बुर्जुआ बुद्धिजीवी पार्टी संगठनों के अनुशासन को धता बताते हैं।

आंदोलन की बेहतरी के लिए ज़रूरी है कि लेनिनवादी उसूलों का सख्ती के साथ पालन किया जाए। ढांचे से ऊपर रहकर या मुक्त रहकर राजनीति करने के किसी भी विचार के खिलाफ निर्मम संघर्ष चलाया जाए। साथ ही लेनिनवादी पार्टी बनाने के कार्यभार को गम्भीरतापूर्वक कार्यसूची में लाया जाए। ■